International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 08
July 2017

हिंदी साहित्य में नारी चित्रण

श्रीमती मनीषा
हिन्दी विभाग
सहायक प्रवक्ता
छोटू राम आर्य महाविद्यालय,
सोनीपत–131001

शोध आलेख सारः–

नारी हर युग में साहित्य सृजन की प्रेरणा बनी है। नारी सिर्फ कोमल और सुडोल काया का ही नाम नहीं बल्कि कोमल कल्पनाओं का भी नाम है। नारी प्रेरणा भी है और जीने का सहारा भी। जब भी सौंदर्य वर्णन की बात आती है तो बेशक वह नारी के सौंदर्य के रूप में ही अभिव्यक्त होती है। जिस तरह प्रकृति की सुंदरता को कोई नकार नहीं सकता उसी तरह नारी सौंदर्य से भी कोई मुंह नहीं फेर सकता। तन और मन की अद्‌वितीय सुंदरता के कारण ही नारी सौंदर्य कभी चित्रकार की कूची में, कभी कवि-कथाकार की लेखनी में, कभी मूर्तिकार के शिल्प में नजर आती है।

मुख्य शब्द

नारी, भारतभूमि, साहित्य सृजन, दृष्टिकोण

हमारी पवित्र भारतभूमि में नारी एक ऐसी कविता है, जिसे प्राचीनकाल से लेकर आज तक के काल में विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा गया है। युग बदले, परिवेश बदले उसके साथ नारी के व्यक्तित्व के विविधि चित्रों में भी अंतर आता गया। एक ही नारी पात्र, भले ही सीता हो या द्रौपदी, उनके चित्रणों में कवि दृष्टिकोण काल सापेक्ष रहे हैं, कभी आदर्श, कभी यथार्थ, प्राचीन काल, मध्यकाल तथा आधुनिक काल में नारी कभी देवी तो कभी कामिनी के रूप में भी चित्रित की गई है। उसका रूप सभी कालों में एक सा नहीं रहा, कारण कवियों के दृष्टिकोण में अंतर आ गया था।

नारी में हर किसी का दिल जीत लेने की ऐसी काबिलियत होती है जिसे वह जन्म से लेकर आती है। उसके कोमल हाथों का स्पर्श पाकर हर जड़ चीज भी चेतना आ जाती है। जिंदगी के रंगमंच पर नारी हर किरदार को बखूबी अदा कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाती है। नारी एक ऐसी कविता है जो कवियों को भाव देकर शब्दों को रूप देने का सामर्थ्य रखती है। प्रेम, धैर्य, त्याग, सर्मपण और लज्जा की प्रतिमूर्ति नारी कभी अपनी कोमलता के कारण तो कभी अपने शक्तिस्वरूपा रूप के कारण कवियों की कल्पनाओं में शामिल होती रही है। तुलसीदास ने रामचरित मानस में नारी को कई भावों में प्रतिष्ठित किया। कहीं लिखा- ढोल गंवार शुद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी तो कहीं लिखा धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपतकाल परखिए चारी। उक्त दोनों पंक्तियों में भाव अलग हैं, रूप अलग हैं, प्रतिष्ठा अलगहै, लेकिन एक चीज जो दोनों जगह है वह यह है कि नारी आपकी सच्ची सहयोगी होती है इस लोक के लिए भी और परलोक के लिए भी। हालांकि ढोल गंवार शुद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी... में कवि के भाव पर जरूर सवाल उठते रहे हैं। सवाल यह कि नारी शक्ति के इतने सशक्त पैरोकार के रूप में प्रतिष्ठित कव तुलसीदास ने ऐसा कैसे लिखा, नारी को ताड़न यानी पीटे जाने का अधिकारी क्यों बताया, लेकिन मुझे लगता है कि यह उस पंक्ति की व्याख्या है जिससे यह सवाल उठा है। और उस पंक्ति की व्याख्या करनेवाले कौन हैं? वे चंद लोग जिनपर पुरुषवादी मानसिकता हावी है।

यह दीगर है कि हमारे समाज में पुरुषों का वचर्स्व रहा है, नारी को हीन समझा जाता रहा लेकिन तुलसीदास ने इस परंपरा को तोड़ा। वेद, पुराण, स्मृतियों में कहीं भी यह नहीं लिखा है नारी हेय है, लेकिन चंद बुद्धिजीवियों ने हमारे इन पुरोतन साहित्य में नारी चित्रण की ऐसी व्याख्या की कि जनमानस में यह भावना बनी कि नारी पति के पैरों की जूती है। वह दासी है, जबकि मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने, योगेश्वर श्रीकृष्ण ने सबने नारी के साख्य भाव को ही स्थापित किया है।

इस रुढ़िवादी सोच को गोस्वामी जी ने तोड़ा। रामचरित मानस में गोस्वामी जी लिखते हैं- जननी

सम जानहि पर नारी, तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे अर्थात जो दूसरे की नारी के प्रति मां का भाव रखता है उसके हृदय में भगवान का वास होता है। भगवान राम जब बाली का वध करते हैं तब उससे कहते हैं... मूढ़ तोहि अतिशय अभिमाना, नारी सिखावन करसि काना (हे बाली, तुमने अभिमान के कारण अपनी पत्नी की बात नहीं मानी इसलिए यह गति हुई) । ढोल गंवार...वाली पंक्ति में भी गोस्वामी जी कहना चाह रहे हैं कि नारी तारण अथार्त तारने वाली होती है जो इस लोक से तारकर आपका परलोक भी सुधार देती है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

छायावादी कवियों के आधार स्तंभ सूर्यकांत त्रिपाठी नें निराला ने सरोज स्मृति में वेदना का उद्रेक कलात्मक ढंग से किया है। इसमें भावों का तीव्र उच्छ्वास है। निराला ने इसकी रचना अपनी पुत्री सरोज की मृत्यु पर की थी। सरोज की मृत्यु कवि निराला के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है और यही घटना सरोज स्मृति का आधार बनी। अपनी पुत्री सरोज की मृत्यु ने निराला के जीवन को दुख से भर दिया था कवि निराला आम आदमी की तरह अपने दुख की अभिव्यक्ति न करके अपने को अटूट बनाए हुए अपने दुःख व वेदना की अभिव्यक्ति को उदात्त रूप से शोकगीत लिखकर अपनी पुत्री सरोज का तर्पण करते हैं।

रामधारी सिंह दिनकर

रामधारी सिंह 'दिनकर' विशेष रूप से राष्ट्रीय जागरण और सांस्कृतिक विकास के ओजस्वी कवि के रूप में प्रसिद्ध रहे। दिनकर जी ने अपनी साहित्यिक कृतियों से समाज में एक नई दिशा और सुव्यवस्थित दशा का स्वरूप भी प्रतिष्ठित किया है। राष्ट्रीय भावधारा में डूबकर क्रांति के स्वरों की अभिव्यक्ति देने के साथ ही दिनकर जी ने सौंदर्य और प्रेम के गीत गाए हैं।

'दिनकर' ने अपनी कृतियों में नारी संबंधित विविध पहलूओं को स्पष्ट करके, समस्त नारी को ऊंचा उठाया है। 'दिनकर' जी की काव्य कृति 'रसवंती' की नारी शीर्षक दो कविताओं तथा 'मानवती' रास की मुरली, पुरुष प्रिया इत्यादि कविताओं में उनका नारी से संबंध में दृष्टिकोण स्पष्ट हुआ है।

'दिनकर' जी की 'रेणुका' की राजा-रानी कविता में उन्होंने नारी को पुरुष की भावनात्मक प्ररेणा के रूप में देखा है, यह परंपरावादी दृष्टिकोण है। रसवंती में पहली 'नारी' शीर्षक कविता में नारी को उन्होंने विधि की अम्लान कल्पना, ज्योत की कली, एक दिव्य विभा के रूप में देखा है। 'पुरुष प्रिया' कविता में नारी के रूप में किरण पुरुष को अपने असर का ज्ञान कराती है और उसका आकर्षण पुरुष जीवन के अभावों और परिसीमाओं का पूरक बन जाता है। वस्तुत: दिनकर जी के काव्य में नारी के विभिन्न रूप हमें देखने को मिल जाते हैं।

आधुनिक और भारतीय संस्कारविहीन नारी के प्रति उनकी दृष्टि अनुदार रही है। ऐसी नारियों के प्रति कवि के पास सिर्फ भर्त्सना है।

कौतुक हास-विहास रभस की ओय सजीव प्रतिमाओं
देखो निज में झांक कभी उस म्लानमुखी नारी को।

अर्थात् गृहस्थ की एकसरसता से उबी हुई एक आत्मा-केन्द्रित नारी में गुण नहीं रहे हैं, कवि की दृष्टि में आधुनिक सिर्फ एक लालसा की लहर है, जो चमड़ी की ताजगी और कोमलता को कायम रखने के लिए मातृत्व का इन्कार करने एवं ऐसी नारी को कवि ने आड़े हाथों लिया है।

काश समझती जन्म निरोधातुर कृत्रिम बंध्याएं
पुत्र-कामना इच्छा है अपने को ही पाने की।

इस प्रकार 'उर्वशी' में रंभा, मेनका, सहजन्या, चित्रलेखा की बातचीत में उनकी स्वच्छन्दवृत्ति, हरजाईपन, मातृत्व से कतराना आदि के काव्यों की विशेषताओं का वर्णन है।

प्रिया के रूप में नारी

नारी रूप की अओध-शक्ति से दिनकर जी अधिक परिचित हैं, दुर्दमनीय, आततायी नर हो या घोर तपस्या करने वाला तपस्वी, नारी अपनी खूबसूरती और मोहक आकर्षण के बल पर इन पर अधिकार जमा सकती है। नर के नारी सदैव एक मादक स्वप्न के समान रही है। "यहां पर कवि की यह मान्यता है कि देश और काल की सीमा से बाहर निकालने का एक मार्ग योग है, लेकिन उसकी दूसरी राह नर-नारी के प्रेम के भीतर से होकर निकालती है।'

पत्नी के रूप में नारी

कहा जाता है कि नारी जब अपना सब कुछ किसी एक व्यक्ति के प्रति समर्पित कर आजीवन उसी से बंध जाती है तो वह उसका पत्नीरूप होता है। प्रेमिका की तरह वह अपने पति का त्याग कदापि नहीं कर सकती, चूंकि उसकी समस्त उम्मीदें पति के इर्द-गिर्द सिमट जाती हैं। जैसे दिनकर जी की सुकन्या अपने गृहणी कार्य रूप में खुश है

'हम हो जाती हैं कृतार्थ अपने अधिकार गंवाकर।'

'रश्मिरथी' में मातृत्वभाव

International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 08
July 2017

'रश्मिरथी' खंडकाव्य में नारी का वह जीन परिलक्षित है जो द्वापरयुग में विद्यमान था और जो आज के युग से भिन्न नहीं है। यहां नारी पात्रों में मुख्य है, कुन्ती उसने सूर्य से कर्ण को विवाह पूर्व जन्म दिया था। विवाह के बाद भी यमराज से धर्म को, इन्द्र से अर्जुन को और वायु से भीम को जन्म दिया। सत्ययुग की पतिव्रता सीता सपने में भी पति राम का ही चिंतन करती है। और किसी दूसरे का चिंतन करना पाप समझती है, जबकि द्वापर की कुन्ती विवाह के बाद भी परायों का चिंतन कर उसे संतान प्राप्त करती है। कवि 'दिनकर' ने कुन्ती के पात्र के माध्यम से वर्तमान युग की पतिता नारियों के सामाजिक प्रश्न को उभारा है। कुन्ती की आंतरिक व्यथा ऐसी स्त्रियों की आंतरिक व्यथा की आवाज है।

समाज के डर से, समाज में अपनी अप्रतिष्ठा होगी- इस भय से आंतकित होकर कुंवारी माता कुन्ती अपने लख्ते जिगर (कलेजे के टुकड़े) को गंगा में बहाती है। आज भी कितने ही नवजात लावारिस शिशु कहीं ढेर पर तो, कहीं खाई में तो, कहीं नदी-तालाब के किनारे फेंक दिये गये नजर आते हैं। ऐसी स्त्रियों की ओर समाज मात्र उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। कवि दिनकर इस सामाजिक प्रश्न को उठाते हैं और कुन्ती के मुख से समाज तक उपेक्षित नारी की व्यथा पहुंचाते हुए कहते हैं-

'अतएव हाय अपने दुध मुंह तनय से

भागना पड़ा मुझको समाज के भय से

धिक्कार ग्लानि, कुत्सा, पछतावे को ही

लेकर तो बिता ही, जीवन निर्मोही।'

उसकी कोख में पैदा हुआ कर्ण जब कुन्ती को धिक्कारता है तो वह उसे कहती है-

'बेटा! सचमुच ही, बड़ी पापिनी हूं मैं।

मानवी-रूप में विकट सांपिनी हूं मैं।

मुझ-सी प्रचंड अधमयी कुटिल हत्यारी

धरती पर होगी कौन दूसरी नारी?'

सत्ययुग से आत तक कलियुग की भी स्त्री जाति पर सामाजिक कड़े नियम लगे हुए हैं। कुन्ती जैसी नारी पापिनी भले ही हो, पर उसके अनाचार के लिए उस अकेली को जिम्मेदारी ठहराना उस पर सरासर अन्याय है। दिनकर जी ने ऐसी नारी को भय त्यागने के लिए कहा है और आने वाले कल को भी समझने की प्रेरणा दी है।

गद्य में नारी

नारी सम्मान और पारस्परिक संबंधों के जटिल अंतर्विरोध, प्रेम के अंतरंग स्वरूप तथा नारी-महत्त्वाकाक्षाओं ने नारी चरित्र में दोहरे व्यक्तित्व का निरूपण करने के लिए उपन्यासकार को बाध्य किया है। आज नारी की स्वयं की पहचान या किसी भी स्तर पर विषयगत अनुभवों के संगठित स्वरूप से होता है। आज नारी विमर्श के स्तर पर नारी चेतना से संपन्न हिंदी उपन्यास लिखे जा रहे हैं। नारी विमर्श और चेतना के विकास का ही परिणाम है कि नारी आज सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, व्यावसायिक और वैज्ञानिक क्षेत्र में पुरुष के समान ही नहीं बल्कि पुरुष से आगे बढकर अपनी निःशंक सेवाएं दे रही हैं। नारी चेतना का ही चरम है, जहां वह यह कहती है- मैं उन औरतों में नहीं हूं जो अपने व्यक्तित्व का बलिदान करती है, जिनकी कोई मर्यादा और शील नहीं होता है। मैं न उनमें हूँ, जिनके चरित्र पर पुरुष की हवा लगते ही खराब हो जाते हैं और न पति की गुलामी को सच्चरित्रा का प्रमाण मानती हैं। मुझमें आत्मनिर्भरता भी है और आत्मविश्वास भी। मुझे स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता है तो पति और परिवार के साथ सामंजस्य बनाने की शक्ति भी। अतः जीवन के यथार्थ को स्वीकार करने में कोई झिझक भी नहीं है। आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी चेतना के परिप्रेक्ष्य में अकेलेपन की अब, स्वतंत्र अस्मिता के संघर्ष के प्रति जागरूकता, विवाह, परिवार और समाज के प्रति उनकी भूमिका तथा मानवीय चेतना की प्रतिष्ठा का चित्रण किया गया है। यह अकेलेपन की स्थिति पाश्चात्य संस्कृति की देन ही है, जो परिवेशजन्य परिस्थिति से उत्पन्न होता है क्योंकि भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम् का ही चिंतन रहा है। आज पाश्चात्य चिंतन की आयातित मानसिकता ने अकेलेपन का सूत्रपात किया है। आज अतिपरिचयजन्य कुंठाओं की अतिशयता ने पारस्परिक संबंधों को खोखला कर दिया। व्यक्ति से व्यक्ति की दूरी बढा दी गई है। यहाँ हमारे अकेलेपन के मूल में औद्योगीकरण, यांत्रकता की वृद्धि बढती हुई जनसंख्या, बेकारी, आर्थिक संकट, अराजकता और भोगवादी स्थितियों के कारण भी हैं।

मेरे संधिपत्र (सूर्यबाला), कर्करेखा (शशिप्रभाशास्त्री), अग्निगर्भा (नागर) आदि की नायिकाएं सदैव अजनबी बनी रहती हैं, अकेलेपन से परेशान रहती हैं या फिर अपने को निरर्थक मान लेती हैं। इनके लिए विवाह आपस का एडजस्टमेंट भर है। कर्क रेखा की तनु अकेलेपन में ही गुजार देती है। त्रिकोण की लोरेन पितृसमाज की मुहर बनना दासता बताती है। बेघर की नायिका बिना विवाह के ही शारीरिक संबंध स्थापित करती है। तीसरा पुरुष (प्रफुल्ल प्रभाकर) की नायिका विवाहित होकर भी ?शक? के घेरे में बँध कर रह जाती है तथा उसके लिए भावनाएं गौण हो जाती हैं। अग्निगर्भा की सीता मात्र पारिवारिक एवं आर्थिक भोग का साधन है। नारी के आत्म-बोध, आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के आधुनिक उपन्यासों में जो नारी चरित्र उभरकर आए हैं उन्हें तीन वर्गों में उच्च, मध्य और निम्न में विभाजित कर देखा जा सकता है। नारी इनमें से किसी भी वर्ग चरित्र में हो, वह अपनी पहचान बनाती है। पहले वर्ग में यदि वह डॉक्टर, प्राध्यापक, अधिकारी, नेता है तो वह विद्रोह और रुढ़ियों को चुनौती देती हुई महत्त्वाकांक्षिणी के रूप में चित्रित है। मध्यवर्गीय चरित्र के रूप में नारी दोहरे मानदंडों से जूझते हुए झूठी इज्जत के कारण अनेक कष्ट भोगने के लिए बाध्य है, यद्यपि वह शिक्षित है, परंतु समाज की झूठी रूढयों में फंसकर अपनी बौद्विकता से दूर रहकर समाज के अनुरूप खुद को ढालने के लिए विवश है। लेकिन तीसरे वर्ग का नारी चरित्र आज सर्वाधिक सशक्त है, वह विद्रोह और रुढ़ियो को खुलकर चुनौती दे रही है तथा समाज के बंधनों और मर्यादा की परवाह न करके अपनी आत्मा और स्वाभिमान की रक्षा करती है।

यहीं पर उच्च मध्यवर्गीय चरित्र भी उभरता है। शिक्षित नारी चरित्र समाज और स्वयं के व्यवहार के बीच कहीं खाई पाटता है तो कहीं अहं की तीव्रता के कारण अपने पारिवारिक संदर्भों और मूल्यों को विघटित करता है। इस वर्ग के पात्रों में प्रमुख नारी चरित्र मालतीदेवी (काली आंधी), महरूख (ठीकरे की मंगनी), शाल्मली (शाल्मली), शीला भट्टारिका (शीला भट्टारिका) आदि है।

इस रुढ़िवादी और विद्रोही नारी चरित्र की परिकल्पना नासिरा शर्मा ने शाल्मली के रूप में की है। वह विवाह के निर्णय से लेकर अंत तक समाज की मर्यादाओं का निर्वाह करती है। पढ़ने की शौकीन शाल्मली विवाहोपरांत प्रशासनिक सेवा में चयन के बाद भी घर-परिवार की मर्यादाओं को ओढ़े रहती है किंतु प्रत्येक वस्तु के लिए पति के आगे हाथ पसारने के संदर्भ में खुला विरोध करती है। गिरिराज किशोर के उपन्यास तीसरी सत्ता की डॉक्टर शिक्षित होकर रूढयों की शिकार होकर अपने बद्मिजाज एवं पति की क्रूरता के कारण अपने स्वाभिमान गला घोंटकर आत्महंता बन जाती है।२ जबकि ठीकरे की मँगनी की महरुख मुसलिम परिवार की शिक्षिता युवती है। अपने मंगेतर रफत के शोधकार्य हेतु बाहर जाने और किसी अन्य से विवाह कर लेने पर उसमें परिवर्तन आ जाता है और रफत के लौटने पर निकाह के आग्रह को ठुकराकर अपने बाल्यकाल के साथी को शौहर बनाकर सारी रुढ़ियां तोडकर दिल्ली चली जाती है।

काली आंधी की नायिका मालती सामाजिक मर्यादाओं और रुढ़ियों को तोड़कर राजनेता के रूप में पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करती है तथा अपनी उन्नति के मार्ग में न अपने पति को आने देती है और न अपनी पुत्री लिली को

मध्यवर्ग के नारी चरित्र मूलतः शिक्षित, पारंपरिक और विद्रोही तो हैं ही, पर इनमें अशिक्षित नारी चरित्र भी हैं। यद्यपि मध्यवर्ग में वर्ग चेतना का रूप सबसे कम लक्षित होता है। इस वर्ग में व्यावसायिक मित्रता, आर्थिक स्थिति और भूमिका में भिन्नता भी द्रष्टव्य है। पर यह वर्ग-चेतना अंतर्मुखी है। आधुनिक उपन्यास के अध्ययन से यह देखा जा सकता है कि इन नारी चरित्रों के पास सीमित साधन होते हुए भी अधिक से अधिक अच्छे ढंग से जीना चाहते हैं तथा वे महत्त्वाकांक्षी भी हैं। कर्क रेखा (शशि प्रभा शास्त्री) की तनु शिक्षित है और भारतीय संस्कारों के पारंपरिक स्वरूप को समझने का प्रयास करती है। शेषयात्रा (उषा प्रियंवदा) की अनुष्का प्रणय के साथ प्रेम-बंधन में बँधती है। वह शिक्षित है और नारी चेतना का विकास उसमें परिलक्षित होता है। शेफाली (शेफाली)

शिक्षित एवं भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं के अस्वीकार के साथ अपने व्यक्तित्व को प्रमुखता देती है। इसमें उस नारी चरित्र का विद्रोही रूप उभरकर आता है।

उम्र एक गलियारे की (शशि प्रभा शास्त्री) की नायिका सुनंदा शिक्षित परंपरागत एवं विद्रोहिणी नारी है। वह भारतीय परंपराओं का निर्वाह करती है, वहीं आत्मबोध से परिपूर्ण है। शेषयात्रा (उषाप्रियवंदा) की अनुष्का, अंधेरा उजाला (विष्णु पंकज) की तारिका-दोनों ही शिक्षित, पारंपरिक एवं विद्रोहिणी हैं। उनके विद्रोह में परिस्थितियों और परिवेश ही कारण बनते हैं। विवाह भी परंपरा और विद्रोह के स्तर पर उभरता है। नारी चेतना के परिप्रेक्ष्य में इन चरित्रों में नारी चेतना के विकास के समानांतर भारतीय संस्कार एवं परंपराएं भी चरित्र निर्मात्री शक्ति बनती है।

निष्कर्ष

आधुनिक उपन्यासों में चित्रित नारी चरित्रों में वैयक्तिक रुचि, महत्त्वाकांक्षा स्वतंत्र चेतना, अस्तित्व और अस्मिता की पहचान से कहीं अधिक जीवन के दुःखों एवं संघर्षों से परिपूर्ण हैं और उसके समानांतर पीढयों का मोहभंग, टूटन, विघटन, वर्ग संघर्ष की समानांतर चेतना एवं जीवन का अर्थ-बोध उकेरा गया है। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि निम्नवर्गीय नारियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक विद्रोहिणी हैं और समाज की नैतिक मान्यताओं, रुढयों एवं परंपराओं को तोडने में सजग एवं सक्रिय हैं। बसंती, अनारो इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। खुदा सही सलामत है (रवींद्र कालिया) की गुलाबदई आर्थिक रुप से टूटना नहीं चाहती। यह उसके अपने व्यक्तित्व के प्रति चेतना है, उसमें अपना स्वाभिमान है। उसमें मूक विद्रोह भी निहित है।
हिंदी साहित्य में पारंपरिक आदर्शवादी और यथार्थवादी नारी चरित्रों का अभाव नहीं है। ऐसे पात्र पारंपरिक आदर्शवादिता और यथार्थ को एक साथ जीते हैं। पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति तथा वैज्ञानिकता और शिक्षा प्रसार के कारण सामाजिक बंधनों की शिथिलता और स्वतंत्र चिंतन ने मानव व्यक्तित्व में परिवर्तन भी दर्शाया है तथा आदमी का अहम् भी व्यापक हुआ है। परिणामतः

नारी की अहंता बढती दिखाई देती है इसलिए इन नारी चरित्रों में नौकरी की ललक, वैवाहिक संबंधों की शिथिलता, पारिवारिक विघटन का उल्लेख समाहित हो गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.समकालीन महिला लेखन -डा. ओमप्रकाश शर्मा; पृ. २१, पूजा प्रकाशन, नई दिल्ली-संस्करण; 1१९९

2. हिंदी साहित्य का इतिहास -डा. रामचन्द्र शुक्ल ,पृ ८२ राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली- संस्करण; १९९६

३. समकालीन हिंदी के पत्र साहित्य में नारी विषयक चिंतन- मध्य युगीन साहित्य में नारी भावना (लेख), उषा पाण्डेय, पृ ६८, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण; १९९३

4. हिंदी महाकाव्यों में नारी चित्रण -डा. श्याम सुन्दर व्यास, पृ. १७८ सुन्दरदास-सुन्दर ग्रंथावली, पृ. ४३४ , राधा पब्लिकेशन-नई दिल्ली,संस्करण; १९७७

5. समकालीन हिंदी पत्रकरिता में हिंदी संदर्भ -डा रमेश कुमार त्रिपाठी, नमन प्रकाशन- नई दिल्ली- ११०००२, प्रथम संस्करण; २००७

6. सेवा समर्पण, नारी विशेषांक, प्रताप लहरी-प्रतापनारायण मिश्र, पृ. १६०, सेवा कुञ्ज-नई दिल्ली, संस्करण, अप्रैल २००४

7. रसज्ञ रंजन-महावीर प्रसाद दिवेदी, पृ. ६०, साहित्य रत्न भंडार, आगरा, संस्करण; १९२०

8. हिंदी महाकाव्यों में नारी चित्रण -डा. श्याम सुन्दर व्यास, स्वर्ण धूलि-सुमित्रा नंदन पंत, पृ.33, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण; १९७७